सांध्य दैनिक

4PM

जिद...सच की

मूल्य ₹ 3/-

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 192 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, बुधवार 19 अगस्त, 2026

सफलता एक घटिया शिक्षक है। यह लोगों में यह सोच विकसित कर देता है कि वो असफल नहीं हो सकते।

–बिल गेट्स

पंत ने टेस्ट में सबसे तेज 100 छक्के जड़कर... 7 | राम मंदिर चढ़ावे का मामला बना... 3 | जनता ने सत्तारूढ़ दल को पूरी... 2

बुलडोजर रुका तो जौहर की चौखट पर पहुंची ईडी

दिल्ली, सहारनपुर, रामपुर में एक साथ जौहर यूनिवर्सिटी से जुड़े ठिकानों पर ईडी की रेड

» यूपी में चुनावी शंखनाद के साथ ही ईडी एक्टिव विपक्ष का आरोप

» आजम के किले में पैसों की पड़ताल, जौहर ट्रस्ट से ठेकों तक कथित धन के रास्ते की तलाश में दिल्ली, रामपुर और सहारनपुर समेत 10 ठिकानों पर छापे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ । उत्तर प्रदेश की सियासत में चुनावी बिगुल अभी औपचारिक रूप से भले न बजा हो लेकिन राजनीतिक मोर्चों पर बारूद की गंध साफ महसूस होने लगी है। 2027 विधानसभा चुनाव जैसे जैसे करीब आ रहे है वैसे-वैसे पुराने चेहरे पुराने किले और पुराने हिसाब फिर से राजनीति के केंद्र में लौटते दिखाई दे रहे हैं।

आज ईडी की रामपुर, दिल्ली और सहारनपुर समेत 10 ठिकानों पर हुई छापेमारी की कार्रवाई ने एक बार फिर उस नाम को सुर्खियों के सबसे ऊपर ला खड़ा कर दिया है जिसे लेकर उत्तर प्रदेश की राजनीति वर्षों से दो ध्रुवों में बंटी रही है। आजम खान और उनकी जौहर यूनिवर्सिटी। ईडी इसे कथित धनशोधन और सरकारी ठेकों से जुड़े वित्तीय लेनदेन की जांच बता रही है। समाजवादी पार्टी ने आज की कार्रवाई को चुनाव से पहले ईडी के एक्टिव होने की कार्रवाई बताया है और कहा है कि डर का महौल बनाने के लिए यह सब? किया जा रहा है। रामपुर में जौहर यूनिवर्सिटी सिर्फ एक युनिवर्सिटी नहीं रही। कभी यह आजम खान के राजनीतिक प्रभाव और महत्वाकांक्षा का प्रतीक बनी तो कभी जमीन और सरकारी संपत्तियों से जुड़े विवादों में घिरी कभी ट्रस्ट को मिले चंदे को लेकर सवालों के घेरे में आई और अब सरकारी ठेकों से जुड़े कथित धन के रास्ते की जांच ने इसे फिर सुर्खियों में ला दिया है। आज ईडी की टीमों ने जौहर ट्रस्ट और मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय से जुड़े दिल्ली, रामपुर और सहारनपुर समेत 10 ठिकानों पर एक साथ छापेमारी कर दी। मौजूदा छापे सरकारी ठेकों से जुड़े धन के कथित डायवर्जन और उसके इस्तेमाल पर केंद्रित है। ईडी यह पता लगाने कि कोशिश कर रही है कि सरकारी परियोजनाओं से जुड़े ठेकेदारों को भुगतान के बाद धन का प्रवाह किस तरह हुआ और क्या उसका कोई हिस्सा जौहर ट्रस्ट या विश्वविद्यालय की गतिविधियों में लगाया गया।

जमीन से शुरू हुई कहानी अब पैसों तक पहुंची जांच

आजम खान से जुड़े जौहर विश्वविद्यालय का विवाद नया नहीं है। वर्ष 2019 के बाद विश्वविद्यालय की जमीन, सरकारी संपत्तियों के इस्तेमाल और जमीन के कथित अधिग्रहण को लेकर कई मामले सामने आए। इन मामलों ने आजम खान और विश्वविद्यालय को लंबे समय तक राजनीतिक और कानूनी विवादों के केंद्र में रखा। लेकिन आज की कार्रवाई ने जांच का फोकस जमीन से आगे बढ़ाकर कथित वित्तीय लेनदेन तक पहुंचा दिया है। यानी कहानी अब सिर्फ यह नहीं है कि विश्वविद्यालय के लिए जमीन कैसे जुटाई गई। जांच एजेंसी अब यह भी देख रही है कि विश्वविद्यालय और ट्रस्ट की गतिविधियों में इस्तेमाल होने वाला पैसा कहां से आया और उसका स्रोत क्या था। खास तौर पर सरकारी ठेकों से जुड़े ठेकेदारों और ट्रस्ट के बीच कथित लेनदेन की कड़ी ईडी के लिए अहम है।

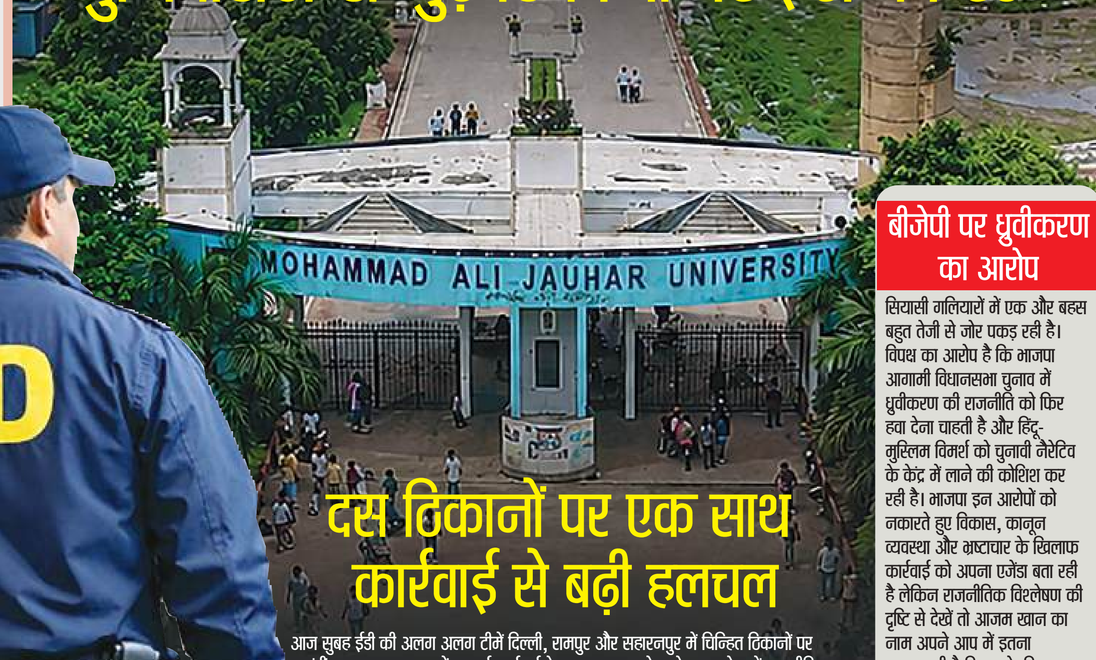

दस ठिकानों पर एक साथ कार्रवाई से बढ़ी हलचल

आज सुबह ईडी की अलग अलग टीमें दिल्ली, रामपुर और सहारनपुर में चिन्हित ठिकानों पर पहुंचीं। एक साथ 10 स्थानों पर हुई कार्रवाई के बाद रामपुर समेत पूरे उत्तर प्रदेश में राजनीतिक हलचल तेज हो गयी है। जौहर यूनिवर्सिटी और आजम खान से जुड़े पुराने विवादों को देखते हुए कार्रवाई को लेकर राजनीतिक प्रतिक्रियाएं भी तेजी से सामने आ रही है। हालांकि ईडी की कार्रवाई के दौरान क्या-क्या दस्तावेज या डिजिटल साक्ष्य मिले हैं इसका पूरा ब्यौरा अभी सामने नहीं आया है। जांच एजेंसी तलाशी के बाद बरामद सामग्री का विश्लेषण करेगी। इसी के आधार पर आगे पूछताछ बयान दर्ज करने या अन्य कानूनी कार्रवाई की दिशा तय हो सकती है

बीजेपी पर ध्रुवीकरण का आरोप

सियासी गलियारों में एक और बहस बहुत तेजी से जोर पकड़ रही है। विपक्ष का आरोप है कि भाजपा आगामी विधानसभा चुनाव में ध्रुवीकरण की राजनीति को फिर हवा देना चाहती है और हिंदू-मुस्लिम विमर्श को चुनावी नैरेटिव के केंद्र में लाने की कोशिश कर रही है। भाजपा इन आरोपों को नकारते हुए विकास, कानून व्यवस्था और भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई को अपना एजेंडा बता रही है लेकिन राजनीतिक विश्लेषण की दृष्टि से देखें तो आजम खान का नाम अपने आप में इतना प्रभावशाली है कि उनके खिलाफ होने वाली हर बड़ी कानूनी कार्रवाई चुनावी बहस का हिस्सा बन जाती है। चाहे वह अदालत का फैसला हो प्रशासनिक नोटिस हो या फिर ईडी की छापेमारी।

चुनाव से पहले आजम नाम नहीं नैरेटिव बन गये

आज की सुबह रामपुर में सिर्फ ईडी की गाड़ियों की चर्चा नहीं थी बल्कि उससे कहीं ज्यादा चर्चा इस बात की थी कि क्या 2027 की लड़ाई में आजम खान फिर एक बार चुनावी धुरी बनने जा रहे हैं? शिवपाल यादव के गृह मंत्री वाले बयान ने जिस राजनीतिक चिंगारी को हवा दी थी ईडी की कार्रवाई ने उसमें नया ईंधन डाल दिया है। अब सत्ता इसे वित्तीय जांच कह रही है

विपक्ष इसे चुनावी दबाव का हिस्सा बता रहा है और जनता एक बार फिर उसी पुराने सवाल के सामने खड़ी है कि रामपुर की राजनीति में आखिर हर रास्ता घूम फिरकर जौहर और आजम तक ही क्यों पहुंच जाता है? जवाब जांच के दस्तावेजों में मिलेगा या चुनावी मैदान में यह आने वाला वक्त तय करेगा लेकिन इतना साफ है कि उत्तर प्रदेश की सियासत में अब चुनाव से पहले आजम सिर्फ एक नाम नहीं बल्कि पूरा नैरेटिव बन चुका है।

ठेकों से निकला कथित पैसा जौहर की चौखट तक कैसे पहुंचा?

ईडी के लखनऊ जोनल कार्यालय ने पीएमएलए की धारा 17 के तहत यह तलाशी अभियान चलाया। जांच एजेंसी के निशाने पर सरकारी ठेकों से जुड़े धन का कथित डायवर्जन और उसके बाद उस रकम के जौहर ट्रस्ट तथा विश्वविद्यालय की गतिविधियों में कथित इस्तेमाल की कड़ी है। एजेंसी की पड़ताल इस बात पर केंद्रित है कि सरकारी परियोजनाओं से जुड़े ठेकेदारों को भुगतान होने के बाद धन का प्रवाह किस दिशा में हुआ और क्या उसका कोई हिस्सा कथित तौर पर ट्रस्ट को दान अथवा विश्वविद्यालय के निर्माण कार्यों में लगाया गया। ईडी के मुताबिक कुछ निजी ठेकेदारों और जौहर ट्रस्ट के बीच हुए वित्तीय लेनदेन जांच के दायरे में हैं। ईडी यह पता लगाने में जुटी है कि इन लेनदेन का वास्तविक स्रोत क्या था रकम किन माध्यमों से ट्रस्ट तक पहुंची और इस पूरी प्रक्रिया से कौन लोग लाभान्वित हुए।

समाजवादी पार्टी पहले से कहती आ रही है

सपा व अन्य विपक्षी दल लंबे समय से आरोप लगाते रहे हैं कि चुनावों से पहले ईडी, सीबीआई और आयकर जैसी एजेंसियों की सक्रियता विपक्ष के मनोबल को तोड़ने और उसके नेताओं पर दबाव बनाने का माध्यम बन जाती है। विपक्ष का आरोप रहा है कि कार्रवाई केवल किसी व्यक्ति तक सीमित नहीं रहती बल्कि उसके राजनीतिक सामाजिक और संस्थागत नेटवर्क तक संदेश पहुंचाती है कि सत्ता से टकराने की कीमत चुकानी पड़ सकती है। हालांकि इन आरोपों को केंद्र सरकार लगातार खारिज करती रही है और उसका कहना है कि जांच एजेंसियां स्वतंत्र रूप से कानूनी साक्ष्यों के आधार पर काम करती हैं।

जनता ने सत्तारूढ़ दल को पूरी तरह नकार दिया है : अखिलेश यादव

» विस-27 चुनाव की तैयारी में जुटी सपा

» सपा प्रमुख बोले- भाजपा के सहयोगियों से सीट बंटवारे पर नहीं बनेगी बात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी के 27 में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए समाजवादी पार्टी ने तैयारी शुरूकर दी है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने खुद मोर्चा संभाल लिया है। वह हर मंच से भाजपा सरकार को घेर रहे हैं। अब अध्यक्ष अखिलेश यादव ने दावा किया है कि उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी का अपने सहयोगी दलों के साथ सीट बंटवारे का गणित जनता खारिज कर देगी। उनके इस बयान पर उप्र भाजपा और एनडीए के सहयोगी नेताओं ने तीखा पलटवार किया है।

यादव ने सोशल मीडिया पर सूत्रों के हवाले से रालोद, सुभासपा, निषाद पार्टी और अपना दल के लिए संभावित सीटों का ब्योरा साझा किया था। उन्होंने कहा कि यह कवायद विफल होगी, क्योंकि जनता ने सत्तारूढ़ दल को ''पूरी तरह नकार'' दिया है। यादव ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में सूत्रों के हवाले से दावा किया कि भाजपा कुछ चुनाव विशेषज्ञों की सलाह पर राष्ट्रीय लोक दल (आरएलडी) को 73 सीट, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) को 39 सीट, निषाद पार्टी को 31 सीट और अपना दल को 19 सीट देने पर विचार कर रही है।

भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी पर सरकार फेल

उत्तर प्रदेश विधानसभा में कुल 403 सीट हैं। यादव ने कहा कि प्रस्तावित व्यवस्था को ''सराहनीय'' माना जा सकता है, लेकिन दावा किया कि यह सीट बंटवारा भी पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक (पीडीए) वर्गों की आबादी के अनुपात में मिलने वाले प्रतिनिधित्व के आधे से भी कम है। उन्होंने आरोप लगाया कि भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, बिजली, सड़क और भर्ती के मुद्दों पर सरकार के रिकॉर्ड के कारण भाजपा की यह योजना ''विफल'' हो जाएगी।

भाजपा बोली- सपा प्रमुख को फर्जी खबरें फैलाना पसंद है

यादव की पोस्ट पर प्रतिक्रि या देते हुए उप्र भाजपा के उपाध्यक्ष नीरज सिंह ने कहा, अखिलेश जी, हम सभी जानते हैं कि आपको फर्जी खबरें फैलाना कितना पसंद है। लेकिन कम से कम आपकी अपनी स्वीकारोक्ति से यह स्पष्ट है कि भाजपा और उसके सहयोगी 27 के उप्र चुनाव से पहले एकजुट हैं, जबकि आपकी पार्टी अपने विधायकों को एक साथ रखने के लिए संघर्ष कर रही है। उन्होंने कहा, हमारे सीट बंटवारे के फॉर्मूले की चिंता न करें। हमारा नेतृत्व इसे संभालने में सक्षम है।

भर्तियों में आरक्षण को कमजोर कर दिया

यादव ने भाजपा और उसके सहयोगी दलों पर ''झूठे मुकदमों और फर्जी मुठभेड़ों'' का सहारा लेने, लोगों के घरों और दुकानों को बुलडोजर से ध्वस्त करने, किसानों, श्रमिकों और पेशेवरों के अधिकारों की रक्षा करने में नाकाम रहने तथा भर्तियों में आरक्षण को कमजोर करने का भी आरोप लगाया। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने अल्पकालिक अग्निवीर भर्ती योजना शुरू करके रोजगार की तलाश कर रहे युवाओं का मनोबल कमजोर किया है। यादव ने कहा कि सरकार विज्ञान और वैज्ञानिकों को पर्याप्त सम्मान देने में भी विफल रही है तथा ''देश की संपत्ति बेच रही है।'' सपा अध्यक्ष ने संविधान में बदलाव की साजिश किए जाने का भी आरोप लगाया। यादव ने कहा, ''लोगों ने भाजपा और उसके सहयोगी दलों को पूरी तरह नकार दिया है और उन्हें हमेशा के लिए विदाई देने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने कहा, आज हर कोई कहता है, हम भाजपा को नहीं चाहते।'

रालोद व अपना दल ने भी सपा को घेरा

रालोद नेता रोहित अग्रवाल ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में दावा किया कि 27 के चुनाव के लिए सपा और कांग्रेस ने गठबंधन किया है और दोनों बराबर सीट पर चुनाव लड़ेंगे। उन्होंने दावा किया, इसका मतलब है कि सपा कांग्रेस को 200 सीट दे रही है। उप्र के मंत्री और अपना दल (एस) के नेता आशीष पटेल ने यादव की पोस्ट पर तीखी प्रतिक्रिया दी। पटेल ने कहा, अपना दल कैडर आधारित पार्टी है, जो जमीनी स्तर की राजनीति करती है। हम एसी कमरों से 'ट्वीट' और 'रीट्वीट' करने की राजनीति में शामिल नहीं होते हैं।

पैसे हो गए हैं खत्म इसलिए छोड़ी भाजपा : पूनावाला

» बोले-मकान मालिक मुझे बीजेपी नेता होने के नाते मुफ्त में मकान नहीं देता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भाजपा के मुखर और लोकप्रिय फायरब्रांड चेहरा रहे शहजाद पूनावाला ने पार्टी प्रवक्ता की भूमिका से अचानक इस्तीफा देकर सबको चौंका दिया है। शहजाद ने अपने इस बड़े फैसले के पीछे की व्यावहारिक और पारिवारिक वजहों का खुलकर खुलासा किया। शहजाद ने बेहद बेबाकी से स्वीकार किया कि वे एक मध्यमवर्गीय परिवार से आते हैं और राजनीति में रहते हुए उनके पास अपना घर का किराया देने के लिए पैसे नहीं बचे थे।

घर चलाना मुश्किल हो रहा था, इसलिए भाजपा का साथ छोड़ने का फैसला किया। हालांकि, पूनावाला ने साफ किया कि भाजपा छोड़ी है, विचारधारा नहीं। शहजाद पूनावाला ने कहा, मेरा मकान मालिक मुझे बीजेपी नेता होने के नाते मुफ्त में मकान नहीं देता। वह मुझसे हर महीने किराया मांगता है। लेकिन 24 घंटे और सातों दिन पार्टी के लिए समर्पित रहने के कारण मैं कमाने का कोई दूसरा जरिया नहीं निकाल पा रहा था। अब तक पहले इकट्ठा की गई जमा-पूंजी से गुजारा चल रहा था, लेकिन अब वो खत्म हो चुकी है, इसलिए दिक्कतें बढ़नी शुरू हो गई हैं। घरेलू परेशानियों का जिक्र करते हुए पूनावाला बताया, कुछ समय पहले मेरी मां का एक्सीडेंट हो गया था, उनकी जिम्मेदारी भी मुझे ही संभालनी है। पारिवारिक जिम्मेदारियों और बेटे के कर्तव्य को पूरा करने के लिए भी समय निकालना चाहता हूं. इन्हीं कारणों से मैंने 30 जुलाई को इस्तीफा दिया, जिसे लंबी बातचीत के बाद स्वीकार किया गया। हालांकि, मैंने पार्टी छोड़ी है, लेकिन बीजेपी की विचाधारा पर अब भी कायम हूं. मेरी सोच बीजेपी के लिए जो थी, वो आज भी वैसी ही है।

बसपा में सतीश चन्द्र मिश्र का कद बढ़ा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मायावती ने यूपी विधानसभा चुनाव 27 से पहले यूपी में बड़ा दांव चला है। मायावती ने सतीश चन्द्र मिश्र को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है। मिश्र लीगल व मीडिया के साथ-साथ अब चुनाव आयोग सम्बंधी काम भी देखेंगे।

मायावती ने एक्स पर लिखा है कि सतीश चन्द्र मिश्र की यूपी चुनाव में अहम भूमिका रहेगी। मायावती ने कहा है कि बसपा यूपी विधानसभा चुनाव में पूरी तरह से जुट गई है। इसके लिए बसपा सभी समाज के लोगों के लिए जमीन पर मजबूती से काम कर रही है। पार्टी प्रत्याशियों के चयन की प्रक्रिया भी शुरू कर चुकी है।

संघ के लोग संगठन के झंडे के बजाय राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा लेकर चलें : अजय राय

» उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने भाजपा पर भी साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बलिया। उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने बलिया में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व भाजपा पर करारा वार किया। राय ने से अपने संघ से कहा कि वह अपने कार्यक्रमों में वंदे मातरम् अनिवार्य करे। उन्होंने संघ के स्वयंसेवकों से संगठन के झंडे के बजाय राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा लेकर चलने को कहा।

इसके अलावा राय ने राम मंदिर चढ़ावा मामले में दी गई एसआईटी क्लीन चिट और भाजपा की हालिया सांगठनिक नियुक्तियों पर भी तीखा हमला बोला। कांग्रेस की उत्तर प्रदेश इकाई के अध्यक्ष अजय राय ने वंदे मातरम् विवाद को लेकर मंगलवार को भाजपा पर पलटवार किया। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) को अपने सभी कार्यक्रमों में राष्ट्रीय गीत को अनिवार्य करने की चुनौती दी और उसके स्वयंसेवकों से संघ के झंडे के बजाय तिरंगा लेकर चलने को कहा।

भाजपा एक डूबता जहाज

राय ने यह भी दावा किया कि भाजपा के सहयोगी संजय निषाद और ओम प्रकाश राजभर पार्टी से बाहर निकलने का रास्ता तलाश रहे हैं। उन्होंने कहा, वे जाने की तैयारी कर रहे हैं। भाजपा एक डूबता जहाज है। संजय निषाद और ओम प्रकाश राजभर धीरे-धीरे बाहर निकलने का रास्ता खोज लेंगे। राय 19 अगस्त को होने वाले बलिया बलिदान दिवस के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए बलिया पहुंचे हैं।

सत्येंद्र जैन की गिरफ्तारी पर भड़की आप

» केजरीवाल ने साधा बीजेपी सरकार पर निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भ्रष्टाचारनिरोधक शाखा (एसीबी) ने दिल्ली जल बोर्ड की मलजल शोधन संयंत्र (एसटीपी) परियोजनाओं की टेंडर प्रक्रिया से जुड़े कथित भ्रष्टाचार के मामले में आम आदमी पार्टी (आप) नेता और पूर्व मंत्री सत्येंद्र जैन और बोर्ड के पूर्व सीईओ उदित प्रकाश राय को गिरफ्तार कर लिया है। एसीबी ने बताया कि जैन व राय के अलावा चार और लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इस गिरफ्तारी के बाद आप ने बीजेपी पर हमला बोला है।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर सरकार पर निशाना साधा है। केजरीवाल ने एक्स पर लिखा कि सत्येंद्र जैन को एक बार फिर बीजेपी ने गिरफ्तार करवा दिया है। अभी कुछ वक्त पहले इन लोगों ने जेल में डालकर उनकी जो दुर्दशा की थी, वह सबको याद है. पिछला केस भी फर्जी था और यह केस भी फर्जी साबित होगा। गौरतलब है क डीजेबी के सीवेज उपचार संयंत्रों के विस्तार और उन्नयन से संबंधित निविदा प्रक्रिया में बड़े पैमाने पर कथित अनियमितताओं, निविदा शर्तों में हेरफेर और आपराधिक साजिश को लेकर सतर्कता निदेशालय की एक शिकायत पर 11 मई, 24 को मामला दर्ज किया गया था।

आम आदमी पार्टी के मीडिया प्रभारी अनुराग ढांडा ने गिरफ्तारी को लेकर कहा कि जिस टेंडर को लेकर मामला बनाया जा रहा है, वह अक्टूबर 22 में हुआ था, जबकि सत्येंद्र जैन को बीजेपी सरकार ने मई 22 से ही एक अन्य मामले में जेल में डाल रखा था। पूरे मामले में कोई तार्किक आधार नहीं है और यह राजनीतिक द्वेष के चलते रची गई साजिश है।

राम मंदिर चढ़ावे का मामला बना बीजेपी की गले की फांस

27 विस चुनाव से विपक्ष को मिला बड़ा सवाल

- » मानसून सत्र में विपक्ष ने सड़क से संसद तक भाजपा को घेरा
- » सपा-आप व कांग्रेस को मिला मुद्दा
- » सपा प्रमुख अखिलेश हर मंच पर रहते हैं मुखर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राम के नाम पर 17 व 22 में यूपी की सत्ता पर काबिज 27 के विस चुनाव में उनके नाम पर लिए गए चंदे के हेरफेर में घिरती नजर आ रही है। अभी समाप्त हुए मानसून सत्र में पूरे विपक्ष ने इसी मुद्दे पर भाजपा के खिलाफ सड़क से संसद तक खूब हल्ला मचाया जिसकी वजह से पूरा सत्र हंगामें की भेट चढ़ गया। 24 में लोक की अयोध्या सीट हारने की टीस से न उबरने वाली भगवा पार्टी लगता है 29 के चुनाव में एकबार फिर विपक्ष के निशाने पर आ गई है। सपा, आप, कांग्रेस समेत कई दलों ने भाजपा की डबलइंजन सरकार पर तीखा प्रहार जारी कर दिया है। खास तौर सपा प्रमुख व उनकी पार्टी इस मुद्दे को हर मंच उठाकर सरकार को घेर रही है।

मामला इतना बढ़ गया है कि इस पर राज्य सरकार ने एसआईटी गठित कर दिया है। प्रधानमंत्री कार्यालय के अधिकारी जांच को निगरानी में रख रहें है। राम मंदिर ट्रस्ट भी अपने स्तर से जांच में लगा हुआ है। इनसबके बीच मामला सुप्रीम कोर्ट की चौखट पर पहुंच गया है। यूपी में 27 में प्रस्तावित विधानसभा चुनाव से पहले समाजवादी पार्टी एक बार फिर बीजेपी को अयोध्या में फंसाने की कोशिश कर रही है। सपा चीफ बीजेपी को दोनों ओर से घेरने की रणनीति बनाते दिख रहे हैं। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने राज्य में आगामी विधानसभा चुनाव 27 से पहले भारतीय जनता पार्टी की हिन्दुत्ववादी सियासत की रणनीति को कमजोर करने की कोशिश शुरू कर दी है। माना जा रहा है कि बीजेपी की इस रणनीति पर पलटवार की शुरुआत उन्होंने अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावे से जुड़ी कथित अनियमितताओं का मुद्दा उठाकर की है। कुल मिलाकर राम मंदिर चढ़ावा विवाद ने अयोध्या की राजनीति को एक बार फिर चर्चा के केंद्र में ला दिया है। अखिलेश यादव लगातार इस मुद्दे को उठाकर बीजेपी पर दबाव बनाने की कोशिश कर रहे हैं, जबकि बीजेपी और सरकार जांच के नतीजों का इंतजार करने की बात कर रहे हैं। अब सबकी निगाहें एसआईटी की रिपोर्ट और उसके बाद होने वाली कार्रवाई पर टिकी हैं. यह देखना दिलचस्प होगा कि इस पूरे विवाद का उत्तर प्रदेश की राजनीति और 27 के विधानसभा चुनाव पर कितना असर पड़ता है। साथ ही बीजेपी की हिन्दुत्ववादी रणनीति पर अखिलेश की रणनीति, कितना सफल हो पाती है।

साल 24 में लगा था बीजेपी को झटका

साल 24 में अयोध्या में मंदिर का लोकार्पण हुआ, उसी साल करीब तीन महीने बाद हुए लोकसभा चुनाव में बीजेपी न सिर्फ 2014 और 19 के मुकाबले कम सीटों के साथ लोकसभा में पहुंची बल्कि फैजाबाद लोकसभा सीट भी हार गई। सपा के अवधेश प्रसाद ने बीजेपी के लल्लू सिंह को पराजित कर दिया। हालांकि चुनाव परिणामों के बाद बीजेपी और उसके नेता यह कहकर खुद को तसल्ली देते रहे कि भले ही पार्टी फैजाबाद लोकसभा सीट हार गई हो, लेकिन अयोध्या विधानसभा क्षेत्र में उसे बढ़त मिली थी।

सपा के तेवर से घबराई पूरी भाजपा

अयोध्या का मुद्दा बीजेपी के लिए राजनीतिक और प्रतीकात्मक दोनों दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। ऐसे में राम मंदिर में चढ़ावे को लेकर उठे विवाद को सियासी बहस का विषय बनाकर सपा प्रमुख ने एक बार फिर बीजेपी को उसी मैदान में घेरने की कोशिश की है, जिसे पार्टी अपनी सबसे बड़ी वैचारिक और राजनीतिक उपलब्धियों में गिनती है। इस मामले में कन्नौज सांसद ने न सिर्फ सबसे पहले मुद्दा उठाया बल्कि जब विशेष जांच समिति गठित कर दी गई उसके बाद यह भी कह दिया कि बताओ अधिकारी जांच करेंगे हमारे भगवान के पुजारियों की? ये सनातन का अपमान है।

उपचुनाव में मिल्कीपुर ने दी थी राहत!

लोकसभा चुनाव के करीब 10 महीने बाद फरवरी 25 में अयोध्या जिले की मिल्कीपुर विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में बीजेपी ने वापसी की। फैजाबाद सांसद और सपा नेता अवधेश प्रसाद के बेटे अजीत प्रसाद को हराकर बीजेपी के चंद्रभानु पासवान ने जीत दर्ज की। इस जीत के बाद बीजेपी ने राहत की सांस ली थी। हालांकि सपा प्रमुख आज भी कई मौकों पर मिल्कीपुर उपचुनाव में कथित धांधली के आरोप लगाते रहे हैं।

भाजपा नेता भी जांच के लिए पीएम को लिख रहे पत्र

उधर, अखिलेश यादव के आरोपों के बीच बीजेपी नेता डॉ. रजनीश सिंह ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर पूरे मामले की जांच कराने की मांग की थी। उन्होंने कहा था कि अगर जांच में किसी तरह की अनियमितता सामने आती है तो दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए, लेकिन यदि आरोप गलत साबित होते हैं तो जांच एजेंसियों की रिपोर्ट ही विपक्ष को जवाब देगी। अब जबकि इस मामले में सरकार ने एसआईटी गठित कर दी है, उसके बाद भारतीय जनता पार्टी अखिलेश यादव के आरोपों को निराधार बताते हुए जांच पूरी होने का इंतजार करने की बात कर रही है। उत्तर प्रदेश सरकार के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने बाराबंकी में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि मामले की जांच के लिए एसआईटी का गठन कर दिया गया है। जांच में जो भी तथ्य सामने आएंगे, उन्हें सार्वजनिक किया जाएगा और दोषियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

अयोध्या बीजेपी के लिए भावनात्मक मुद्दा

भारतीय जनता पार्टी, उसके सहयोगी दल और उनके नेता दावा करते रहे हैं कि अयोध्या में राम मंदिर 500 वर्षों के संघर्ष के बाद बना. हालांकि राम मंदिर के उद्घाटन और लोकार्पण के बाद चुनावों में बीजेपी को इसका सीधा लाभ मिलता नहीं दिखा। अयोध्या जिले में रुदौली, मिल्कीपुर (एससी), बीकापुर, अयोध्या और गोसाईंगंज विधानसभा सीट हैं। साल 22 के चुनाव में अयोध्या से बीजेपी के वेद प्रकाश, बीकापुर से अमित सिंह चौहान, रुदौली से रामचंद्र यादव और गोसाईंगंज से सपा के टिकट पर अभय सिंह (जो अब बीजेपी के साथ हैं) ने जीत हासिल की थी। वहीं मिल्कीपुर से सपा के अवधेश प्रसाद विधायक चुने गए थे। यानी 22 में पांच में से तीन सीटों पर बीजेपी और दो सीटों पर सपा ने जीत दर्ज की थी। हालांकि आज के सियासी परिप्रेक्ष्य में पांचों सीटों पर बीजेपी का कब्जा है।

एसआईटी की जांच में दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा : दिनेश शर्मा

इसके साथ ही बीजेपी सांसद दिनेश शर्मा ने अयोध्या राम मंदिर चंदे में हेराफेरी के आरोपों की तीन सदस्यीय एसआईटी जांच पर कहा, ये चोरी शब्द अच्छा नहीं है, जो भी विवाद है, उस पर लोग पारदर्शी तरीके से और समर्पित भाव से काम कर रहे हैं, एसआईटी का गठन हो चुका है, इसलिए इस पर ज्यादा बोलना उचित नहीं है, जो एसआईटी का निर्णय आएगा, वह देखा जाएगा। इसके बाद दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।

7 जून दोपहर को सपा चीफ ने अयोध्या मामले पर सबसे पहला पोस्ट किया

7 जून दोपहर को सपा चीफ ने अयोध्या मामले पर सबसे पहला पोस्ट किया। उन्होंने दावा किया था, समस्त विश्व में भगवान राम के उपासकों के लिए ये एक बेहद संवेदनशील समाचार है कि 'राम मंदिर' के चढ़ावे की करोड़ों की रकम गायब पाई गई है। उसके बाद फिर अखिलेश ने 7 जून को ही देर रात एक पोस्ट किया, जिसमें श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी और महासचिव के बयान पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने लिखा था - चेहरे के भाव और देह की भाषा हताशा और निराशा से भरी है। अखिलेश ने राम मंदिर में चढ़ावे को लेकर लगाए गए अपने आरोपों पर स्पष्टीकरण आने के बाद 9 जून को 11 सवाल भी पूछे। अपने इन सवालों में कन्नौज सांसद ने पूछा था– डबल इंजन क्या सिर्फ डबल ईंधन का उपभोग करने के लिए हैं या उनकी कोई जिम्मेदारी भी है? अपने इस सवाल के जरिए अखिलेश, राम मंदिर के बहाने, भारतीय जनता पार्टी की केंद्र और यूपी की राज्य सरकार को निशाना बनाने की कोशिश करते दिखे। इसी दिन देर रात एक पोस्ट में अखिलेश ने पूछा था– सरकार मौन क्यों है? क्या जांच की आंच से बड़े लोग डरे हुए हैं? करीब चार दिन बाद 13 जून को अखिलेश ने फिर लिखा. अखिलेश का यह पोस्ट एसआईटी गठित होने के बाद आया। इसमें उन्होंने लिखा कि यदि दोषी के बारे में पता करने में पुलिस अक्षम है तो हम सहायता कर दें। फिर 14 जून को अखिलेश ने आगरा में एक कार्यक्रम के दौरान कहा– प्रभु श्रीराम के चढ़ावे में अगर कोई बात हुई है तो कैमरा बंद करके आपस में बातचीत कर लें। जो चढ़ावा चोरी हुआ है वो वापस कर दें। अधिकारी जांच करेंगे हमारे पुजारियों की? यह सनातन धर्म का अपमान है। कोई इसको स्वीकार नहीं कर सकता।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

वाद-विवाद होना लोकतंत्र के लिए लाभकारी

> भारतीय ज्ञान परंपरा में संवाद का सर्वोच्च स्थान है। यहां गुरु शिष्य पर अपनी बात थोपता नहीं, बल्कि प्रश्नों के द्वारा उसकी शंका का समाधान कर उसे निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। इस प्रकार उदाहरणों में नचिकेता-यम संवाद और श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद विशेष रूप से विख्यात है।

भारत में संवाद व बहस की पुरातन काल से होता रहा है। बड़े -बड़े दरबार में सत्ताधीशों के कार्यों पर आलोचना व चर्चा होती रही है। वर्तमान सरकार विरासत को सहजने की बात करती है पर उस वाद-विवाद की परंपरा को आज के परिपेक्ष्य में लागू करने से कतराती है जबकि लोकतंत्र में उसकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज की युवा हमारी पीढ़ी जैसी नहीं बल्कि उससे थोड़ी अलग है वह आदेश नहीं, बल्कि तर्क, प्रश्न और संवाद चाहती है। जेन जी तर्क तो करते हैं लेकिन उसके साथ ही ये भारतीय संस्कृति, परिवार, सामाजिक उत्तरदायित्व और वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे मूल्यों का भी सम्मान करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में संवाद का सर्वोच्च स्थान है। यहां गुरु शिष्य पर अपनी बात थोपता नहीं, बल्कि प्रश्नों के द्वारा उसकी शंका का समाधान कर उसे निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। इस प्रकार उदाहरणों में नचिकेता-यम संवाद और श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद विशेष रूप से विख्यात है। नेता-छात्र संवाद भारतीय संस्कृति एवं परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाग रहा है।

हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा में देश के नेतृत्वकर्ताओं, सम्राटों, ऋषियों, गुरुओं एवं युवा शिष्यों, छात्रों के मध्य संवाद को समाज के निर्माण का मुख्य आधार माना गया है। जेन-जी के साथ डिक्टेशन के बजाय डिस्कशन को प्राथमिकता देते हुए संघ प्रमुख ने संवाद का मार्ग चुना। यह पहल न केवल युवा पीढ़ी के विचारों, प्रश्नों और आकांक्षाओं को समझने की आवश्यकता को रेखांकित करती है, बल्कि भारत की उस प्राचीन संवाद-परंपरा की पुनर्प्रतिष्ठा भी करती है, जिसमें संवाद को सामाजिक जीवन का आधार माना गया है। आज जब भारत विकसित राष्ट्र की दिशा में आगे बढ़ रहा है, युवाओं के साथ संवाद की यह परंपरा उनके ऊर्जा, नवाचार और दृष्टि को राष्ट्र-निर्माण से जोड़ने में महती भूमिका निभा सकती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में संवाद केवल वार्तालाप नहीं है, अपितु सत्य की खोज, आपसी मतभेदों का समाधान एवं ज्ञान के आदान-प्रदान का जरिया रहा है। उपनिषदों में वर्णित गुरु-शिष्य के मध्य संवाद, भगवद्गीता में श्रीकृष्ण एवं अर्जुन का संवाद तथा बौद्ध-जैन परंपराओं की शास्त्रार्थ परंपरा इसका अनोखा उदाहरण है जो हमें दो पीढ़ियों की बीच हुए संवाद की महत्ता बताते हैं। हमारी भारतीय परंपरा का मूल मंत्र है वादे वादे जायते तत्त्वबोध,, अर्थात संवाद से ही सत्य का बोध होता है। मोहन भागवत का जेन जी से संवाद इसी परंपरा को वर्तमान में आगे बढ़ाने का प्रयास है, जिसमें युवाओं के साथ सम्मानपूर्ण, तर्कपूर्ण और खुले संवाद के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों को जोड़ने की बात कही गई है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

बेरोजगारों का आक्रोश बढ़ाती शैक्षिक विसंगतियां

विश्वनाथ सचदेव

कुछ ही दिन पहले राजधानी दिल्ली में युवा आक्रोश का एक नमूना देखा था देश ने। युवाओं की 'कॉकरोच पार्टी' ने शिक्षा मंत्री का इस्तीफा दिलवाकर ही दम लिया था। फिर ऐसा ही आक्रोश झारखंड की राजधानी में पहुंचा। पिछले लगभग दो सप्ताह से रांची में युवा आंदोलन कर रहे हैं। सरकार से उनकी बातचीत तो हुई, पर बात बनी नहीं। सरकार ने दावा किया है कि युवाओं की नब्बे प्रतिशत मांगें स्वीकार कर ली गई हैं। जो दस प्रतिशत बची हैं उनमें से कुछ न्यायालय में विचाराधीन हैं। पर छात्र (युवा) मान नहीं रहे। अपने दावे के अनुसार वे राज्य की विधानसभा को घेर तो नहीं पाये, पर वहां तक पहुंच अवश्य गए। उधर सरकार भी डट गई है। पता नहीं क्यों वह बची हुई दस प्रतिशत मांगें, जिनमें प्रमुख मांग मामले को सीबीआई के सुपुर्द करने की है, स्वीकार नहीं कर पा रही।

शायद आप तक यह सब पहुंचने तक विवाद का कोई हल भी निकल आए। लेकिन, समस्या मात्र एक विवाद की नहीं है। कहीं अधिक गंभीर है मामला—समस्या युवाओं के आंदोलनी तेवरों के कारण समझने की है। युवाओं की हताशा और आक्रोश को समझने की आवश्यकता है। यह अनायास ही नहीं हुआ कि देश में सब तरफ युवा-आक्रोश की बात होने लगी है। एक अर्से से यह गुस्सा भीतर ही भीतर पनप रहा था। उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश ने पता नहीं क्या सोच कर देश के युवाओं की तुलना तिलचट्टों (कॉकरोचों) से कर दी और उन्हें परजीवी घोषित कर दिया। सात समंदर पार बैठे एक भारतीय युवक को कुछ खल गया और उसने मजाक-मजाक में एक कॉकरोच पार्टी बना डाली। शायद यह उसे भी नहीं पता था कि उसका यह कदम देश के युवाओं की पीड़ा की अभिव्यक्ति बन जाएगा। बहुत तीखी और पीड़ादायक अभिव्यक्ति थी यह। जंतर-मंतर पर जो कुछ हुआ और अब रांची में जो कुछ हो रहा है या फिर लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी छात्रों की जिस गूंज को स्वर दे रहे हैं और आरएसएस के प्रमुख जिन युवाओं को अपनी पीढ़ी से अधिक ईमानदार और देशभक्त बता रहे हैं, यह सब कुल मिलाकर देश के युवाओं की पीड़ा को ही उजागर करने वाला है।

यह सही है कि इस सारे प्रकरण की शुरुआत नीट जैसी और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में हुई धांधली का कारण बनी। यह भी सही है कि यह धांधली अपने आप में कोई छोटी समस्या नहीं है। पर देश का युवा जिस समस्या से जूझ रहा है वह कहीं अधिक जटिल और गहरी है। हताश है देश का युवा। वह जब नीट

जैसी परीक्षाओं में बैठता है तो उसकी आंखों में एक सुनहरे भविष्य का सपना होता है। बहुत पीड़ा होती है जब ऐसा कोई सपना टूटता है। और यह पीड़ा तब और गहरी हो जाती है जब वह यह पाता है कि इसमें उसका कोई दोष नहीं है। कुछ गलत तत्व, कोई गलत व्यवस्था और कुछ गलत नीतियां उसके भविष्य के साथ खिलवाड़ करने के लिए जिम्मेदार हैं। वह समझ नहीं पाता कि उसका अवसर की समानता का अधिकार कोई कैसे छीन लेता है; सारी ज़रूरी योग्यताओं के बावजूद वह बेकारी से पीछा क्यों नहीं छुड़ा पाता? हां, बेकारी एक बड़ा कारण है हमारे देश के युवाओं की पीड़ा और आक्रोश का। सरकार भले ही कैसे और कितने ही दावे करती रहे अच्छे दिनों के, पर देश के युवा पथराई आंखों से इंतजार कर रहे हैं उन दिनों और उन स्थितियों का जब उनके दिन अच्छे होंगे। हकीकत यह है कि 15 से 24 आयु वर्ग के हमारे युवा आज एक गंभीर आर्थिक-सामाजिक चुनौती बन गए हैं। हमारे पास युवाओं की सबसे बड़ी आबादी है। यह संख्या हमारी ताकत होनी चाहिए थी, पर दुर्भाग्य से आज यह अपने आप में एक समस्या है। हम यह कह कर अपने आप को कुछ दिलासा दे सकते हैं कि हमारी युवा बेरोज़गारी की दर (10.2 प्रतिशत) दुनिया की बेरोजगारी दर से कम है। दुनिया की युवा बेरोजगारी दर 15.6 प्रतिशत है। हमारे देश में कुल बेरोजगार आबादी का लगभग 83 प्रतिशत हिस्सा युवाओं का है। इन बेरोजगारों में एक बड़ा हिस्सा पढ़े-लिखे युवाओं का है। दुर्भाग्य है कि यह पढ़ाई रोजगार की दृष्टि से उनके बहुत काम की नहीं है। अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के एक सर्वेक्षण के अनुसार देश में 20 से 29 वर्ष की आयु के लगभग एक करोड़ दस लाख युवा स्नातक बेरोजगार हैं।

इस स्थिति के दो अर्थ हो सकते हैं—एक तो यह कि प्रार्थी ज्यादा हैं और रोजगार है नहीं, और दूसरा यह कि स्नातक तक की पढ़ाई के दौरान उन्हें जो पढ़ाया गया है वह उन्हें किसी रोजगार के लायक नहीं बनाता। दोनों ही अर्थ अपने आप में डराने वाले हैं। यह स्थिति हमारी उद्योग-नीति और शिक्षा-नीति दोनों पर सवालिया निशान लगाती है। एक सर्वेक्षण के अनुसार हमारे देश में प्रति वर्ष 80 लाख से 1 करोड़ स्नातक तैयार होते हैं। इनमें से लगभग 15 लाख विद्यार्थी हर साल केवल इंजीनियरिंग क्षेत्र से होते हैं।

कलम के ओज से जगाई आज़ादी की अलख

डॉ. दयानंद कादियान

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन केवल मैदानों में लड़ी गई लड़ाइयों का इतिहास नहीं है, बल्कि यह कलम, विचार और शब्दों की भी एक विराट क्रांति थी। जब अंग्रेजी हुकूमत ने जनता की आवाज दबाने के लिए कठोर कानून बनाए, तब देश के अनेक पत्रकारों, लेखकों और क्रांतिकारियों ने लेखन को हथियार बना लिया। हरियाणा की धरती भी इस वैचारिक संघर्ष की साक्षी रही। यहां के अनेक स्वतंत्रता सेनानियों और क्रांतिकारी पत्रकारों का साहित्य इतना राष्ट्रभक्तिपूर्ण व जनजागरण करने वाला था कि ब्रिटिश सरकार ने उसे प्रतिबंधित कर दिया। यह प्रतिबंध प्रमाण था कि उनकी कलम अंग्रेजों के लिए बड़ी चुनौती थी। हरियाणा के क्रांतिकारी साहित्यकारों में कामरेड मांगेराम वत्स का नाम उल्लेखनीय है।

रोहतक के मांडौठी गांव में जन्मे स्वतंत्रता सेनानी मांगेराम ने भूमिगत पत्रकारिता को आजादी के संघर्ष का माध्यम बनाया। उनका संबंध शहीद भगत सिंह व चंद्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियों से था। अंग्रेज सरकार का प्रेस पर कड़ा नियंत्रण था। राष्ट्रवादी विचारों छापना राजद्रोह माना जाता था। फिर भी मांगेराम और उनके साथियों ने साइक्लोस्टाइल मशीनों, हस्तलिखित प्रतियों व गुप्त वितरण तंत्र के जरिये क्रांतिकारी साहित्य गांव-गांव पहुंचाया। उनके द्वारा प्रकाशित 'बोलसेविक' मजदूरों, किसानों व युवाओं में चेतना जगाता था। इसी तरह 'कीर्ति' और 'कीर्ति की गूंज' जैसे पत्रों ने क्रांतिकारी विचारधारा को व्यापक आधार दिया। इनमें छपे लेख ब्रिटिश साम्राज्यवाद की तीखी आलोचना करते। मांगेराम वत्स इनके मुख्य प्रकाशक थे। लाहौर से प्रकाशित 'लाल ढिंढोरा' भी उनके प्रयासों से हरियाणा तक पहुंचता था जो उग्र राष्ट्रवादी तेवरों के लिए प्रसिद्ध था। हिसार से प्रकाशित 'शिवाजी' समाचार पत्र के संपादन में भी मांगेराम वत्स की अहम भूमिका रही। यह पत्र स्वराज्य की भावना को स्वतंत्रता संघर्ष से जोड़ता था। दिल्ली से निकलने वाले 'ब्राह्मण कुमार' के माध्यम से भी उन्होंने सामाजिक चेतना और राष्ट्रवाद का प्रसार किया। बता दें, उन्होंने पंडित श्रीराम शर्मा के प्रसिद्ध पत्र 'हरियाणा तिलक' में सहायक संपादक के रूप में कार्य करते हुए ब्रिटिश विरोधी लेख लिखे, जिसने क्षेत्रीय राष्ट्रीय चेतना को दिशा दी।

मांगेराम का योगदान केवल पत्रकारिता तक सीमित नहीं था। आजादी के बाद उन्होंने अपने संस्मरणों व ऐतिहासिक लेखन के जरिये हरियाणा के क्रांतिकारी आंदोलन का दस्तावेजीकरण किया। उनकी पुस्तक 'हरियाणा और क्रांतिकारी आंदोलन' शोधकर्ताओं के लिए अमूल्य स्रोत मानी जाती है। इसमें भूमिगत गतिविधियों, भगत सिंह से संबंधों व जेल के अनुभवों का चित्रण है। हरियाणा के प्रतिबंधित साहित्य की परंपरा में बाबू बालमुकुंद गुप्त का स्थान अत्यंत ऊंचा है। वे हिंदी पत्रकारिता के उन अग्रदूतों में थे जिन्होंने व्यंग्य को औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध हथियार बनाया। उनके प्रसिद्ध स्तंभ 'शिवशंभू के चिट्ठे' ने अंग्रेजी शासन की नीतियों, दमन और पाखंड पर करारा प्रहार किया।

इस लेखन ने राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न की। पंडित नेकीराम शर्मा ने अपने पत्र 'संदेश' के माध्यम से राष्ट्रवादी विचारों को जन-जन तक पहुंचाया। उनके लेखों में स्वदेशी, स्वाभिमान और औपनिवेशिक शोषण के विरुद्ध स्पष्ट स्वर सुनाई देता था। अंग्रेजी सरकार में ऐसे प्रकाशनों पर निगरानी रखी गई और इन्हें दमन का सामना करना पड़ा। इसी कड़ी में पंडित श्रीराम शर्मा का 'हरियाणा तिलक' विशेष महत्व रखता है। यह मात्र समाचारपत्र नहीं, बल्कि हरियाणा की क्षेत्रीय राष्ट्रीय चेतना का मंच था। पत्र ने संदेश दिया कि हरियाणा की पहचान सिर्फ भौगोलिक क्षेत्र नहीं, राष्ट्र निर्माण की सक्रिय शक्ति है। क्रांतिकारी साहित्य का एक और महत्वपूर्ण पक्ष था राम सिंह जाखड़ द्वारा वितरित किए गए गुप्त पर्चे। ये पर्चे जेलों के भीतर तक पहुंचते थे और बंदी क्रांतिकारियों का मनोबल बढ़ाते थे। उनमें त्याग, बलिदान और संघर्ष की प्रेरणा भरी होती थी। अंग्रेजी राज में ऐसे पर्चों को भी प्रतिबंधित किया गया। इन सभी क्रांतिकारी पत्रकारों और लेखकों ने साहित्य को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं माना, बल्कि जनांदोलन का औजार बना दिया। उस दौर में रेडियो और बड़े संचार माध्यम अंग्रेजों के नियंत्रण में थे, तो छोटे समाचारपत्र, हस्तलिखित पर्चे व भूमिगत पत्रिकाएं लोगों तक खबरें पहुंचाती थीं।

गांवों में लोग इन्हें छिपाकर पढ़ते, दूसरों को सुनाते और आगे पहुंचा देते। इस प्रकार प्रतिबंधित साहित्य ही मौखिक और लिखित जनसंचार आंदोलन बन गया। ब्रिटिश सरकार ने वर्नाकुलर प्रेस एक्ट, राजद्रोह कानून और जब्ती की कार्रवाइयों के जरिये इन आवाजों को दबाने का प्रयास किया। संपादकों को जेल भेजा, प्रेस सील कीं, प्रतियां जब्त की और जुर्माने लगाए। लेकिन दमन जितना बढ़ा, इन लेखकों की लोकप्रियता उतनी ही बढ़ती गई। जनता ने उन्हें अपने संघर्ष का प्रतिनिधि माना। आज जब हम स्वतंत्र भारत में अभिव्यक्ति की आजादी का आनंद लेते हैं, तब इन क्रांतिकारी पत्रकारों के योगदान को याद करना जरूरी है। उन्होंने दिखाया कि कलम में सत्ता को चुनौती देने की अद्भुत शक्ति है। हरियाणा के इन प्रतिबंधित समाचारपत्रों व लेखकों ने अंग्रेजी शासन का विरोध किया व जनता में राष्ट्रीय गौरव और स्वतंत्रता की आकांक्षा भी जगाई। यह साहित्य केवल कागज पर लिखे शब्द नहीं थे; स्वतंत्रता की पुकार था। 'कीर्ति' की गूंज, 'बोलसेविक' की चेतावनी, 'लाल ढिंढोरा' का बिगुल, 'हरियाणा तिलक' का आत्मसम्मान और 'शिवशंभू के चिट्ठे' का व्यंग्य-इन सबने मिलकर हरियाणा की जनता के भीतर राष्ट्रभक्ति की ऐसी ज्वाला प्रज्जवलित की जिसे ब्रिटिश साम्राज्य बुझा नहीं सका।

दूषित पानी पीने से इन बिमारियों का है खतरा

बारिश के मौसम में गंदा पानी पीना स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन सकता है। मानसून के दौरान दूषित पानी के कारण जलजनित बीमारियों का जोखिम बढ़ जाता है, जिससे हर उम्र के लोगों को सतर्क रहने की जरूरत होती है। विशेषज्ञों के अनुसार, इस मौसम में केवल साफ और सुरक्षित पानी का ही सेवन करना चाहिए। साथ ही पानी को सही तरीके से संग्रहित करना और स्वच्छता का ध्यान रखना भी बेहद जरूरी है। छोटी-सी लापरवाही कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकती है। इसके अलावा मानसून के दिनों में मच्छरों के कारण होने वाली बीमारियों का खतरा तो बढ़ता ही है साथ ही खान-पान को लेकर बरती गई जरा सी भी लापरवाही आपको फूड-पॉइजनिंग जैसी समस्याओं का शिकार बना सकती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ मानसून के दिनों में संतुलित आहार लेने पर खास जोर देते हैं। डॉक्टर कहते हैं, इन दिनों में हमें नियमित रूप से ऐसे पोषक तत्वों की जरूरत होती है जो शरीर को अंदर से मजबूत रखें और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाएं।

दस्त, उल्टी, पेट दर्द और ऐंठन

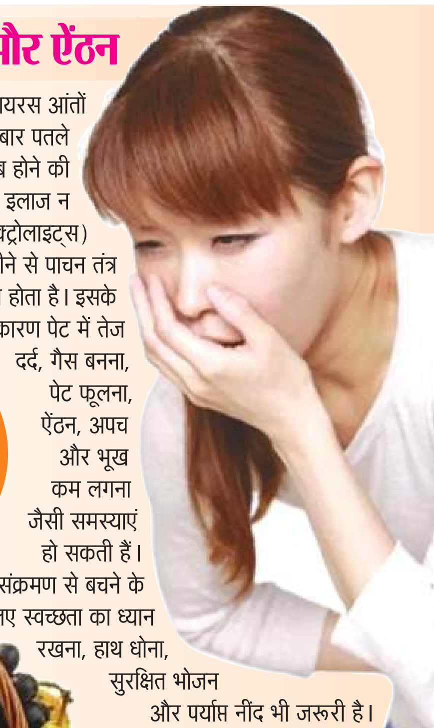

दूषित पानी में मौजूद बैक्टीरिया और वायरस आंतों को संक्रमित कर देते हैं। इससे बार-बार पतले दस्त, उल्टी, मतली और पेट खराब होने की समस्या हो सकती है। यदि समय पर इलाज न मिले, तो शरीर में पानी और लवण (इलेक्ट्रोलाइट्स) की कमी हो सकती है। संक्रमित पानी पीने से पाचन तंत्र प्रभावित होता है। इसके कारण पेट में तेज दर्द, गैस बनना, पेट फूलना, ऐंठन, अपच और भूख कम लगना जैसी समस्याएं हो सकती हैं। संक्रमण से बचने के लिए स्वच्छता का ध्यान रखना, हाथ धोना, सुरक्षित भोजन और पर्याप्त नींद भी जरूरी है।

बचने के लिए करें ये काम

पानी उबालकर पिएं

पानी को कम से कम 1 मिनट तक अच्छी तरह उबालें। ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों में लगभग 3 मिनट तक उबालना बेहतर माना जाता है।उबले हुए पानी को ठंडा करके ढक्कन वाले साफ बर्तन में रखें। पानी हमेशा ढक्कन वाले साफ बर्तन में रखें। घर की पानी की टंकी की नियमित सफाई और कीटाणु शोधन करें। यदि टंकी खुली है, तो उसे अच्छी तरह ढककर रखें।

डिहाइड्रेशन

लगातार दस्त और उल्टी होने से शरीर से पानी और आवश्यक खनिज तेजी से निकल जाते हैं। इसके लक्षण हैं बहुत अधिक प्यास लगना, मुंह सूखना, चक्कर आना, कमजोरी, आंखें धंस जाना, पेशाब कम आना या गहरा पीला होना। याद रखें कि गंभीर डिहाइड्रेशन जानलेवा भी हो सकता है, विशेषकर बच्चों और बुजुर्गों में। इसके अलावा दूषित पानी पीने से कई गंभीर बीमारियां हो सकती हैं, जैसे- हैजा, टाइफाइड, हेपेटाइटिस, लिवर का संक्रमण, जिसमें पीलिया, बुखार, उल्टी और थकान हो सकती है।

विटामिन-सी जरूरी

विटामिन-सी एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट है, जो शरीर की कोशिकाओं को ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस से बचाने और इम्युनिटी को ठीक रखने में मदद करता है। विशेषज्ञों का कहना है कि ज्यादातर स्वस्थ लोगों को संतुलित आहार से पर्याप्त विटामिन-सी मिल सकता है। हालांकि जिन लोगों में इसकी कमी है उन्हें सप्लीमेंट की सलाह दी जाती है। बारिश के मौसम में संक्रमण का जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे समय में संतुलित आहार के साथ पर्याप्त विटामिन-सी लेने से प्रतिरक्षा प्रणाली सामान्य रूप से काम करने में मदद मिलती है। कई खट्टे फलों में विटामिन-सी की भरपूर मात्रा पाई जाती है। आंवला, अमरूद, संतरा, मौसंबी, नींबू, कीवी और टमाटर इसके अच्छे स्रोत हैं। भारतीय आहार में आंवला और अमरूद विशेष रूप से विटामिन-सी से भरपूर माने जाते हैं। मौसम के अनुसार ताजे फल और सब्जियों का सेवन करना सप्लीमेंट की तुलना में अधिक लाभकारी माना जाता है।

हंसना मना है

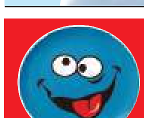

विणा पति से: तुम सच में, बहुत सीधे साधे और भोले हो, तुम्हें कोई भी आसानी से बेवकूफ बना सकता है।
पति: सच कह रही हो, शुरुवात तो तुम्हारे पापा ने ही की है।

पति: अगर मैं मर गया तो तुम दूसरी शादी करोगी? वाईफ: नहीं, मैं अपनी बहन के साथ पूरी जिन्दगी रह लुंगी।
वाईफ: अगर मैं मर गयी तो तुम दूसरी शादी करोगे? हसबैंड: मैं भी तुम्हारी बहन के साथ पूरी जिन्दगी रह लूंगा।

पहला दोस्त: यार मैं जिस लड़की को चाहता हूं, उसने मुझसे शादी नहीं की।
दूसरा दोस्त: तुमने उसे बताया की तेरा चाचा करोड़पती है? पहला दोस्त: हां मैने बताया था। दूसरा दोस्त: तो फिर?
पहला दोस्त: अब वो मेरी चाची है।

शादी की सालगिरह पर पत्नी को गुलाब देते हुए पति बोला, सालगिरह मुबारक हो! पत्नी: यह नहीं मुझे कोई सोने की चीज दिला दें, पति: ओ, यह लो तकिया और आराम से सो जाओ।

आजकल दो चीज सिर्फ किस्मत वालों को ही मिलती है। एक तो जंगल में घुमता सफेद हाथी और दुसरा बिना अफेयर वाला जीवन साथी।

कहानी | एक घमंडी हाथी और चींटी

एक जंगल में एक हाथी रहता था। उसे अपने शरीर और अपनी ताकत का बहुत घमंड था। उसे रास्ते में जो भी जानवर मिलता, वो उसे परेशान करता और डरा कर भगा देता। एक दिन वह कहीं जा रहा था। उसने एक पेड़ पर तोते को बैठा देखा और उससे अपने सामने झुकने के लिए बोला। तोते ने झुकने से मना कर दिया, तो गुस्से में आकर हाथी ने वो पेड़ ही उखाड़ दिया, जिस पर तोता बैठा था। तोता उड़ गया और हाथी उसे देख कर हंसने लगा। फिर एक दिन हाथी नदी के किनारे पानी पीने के लिए गया। वहीं पर चींटियों का छोटा-सा घर था। एक चींटी बड़ी मेहनत से अपने लिए खाना इकट्ठा कर रही थी। यह देख हाथी ने पूछा कि तुम क्या कर रही हो, तो चींटी ने कहा कि बरसात का मौसम आने से पहले अपने लिए भोजन जमा कर रहीं हूं, ताकि बारिश का मौसम बिना किसी परेशानी से निकल जाए। यह सुन कर हाथी के मन में शरारत सूझी और उसने अपनी सूंड़ में पानी भर कर चींटी के ऊपर डाल दिया। पानी से चींटी का भोजन खराब हो गया और वो पूरी भीग गई। यह देखकर चींटी को बहुत गुस्सा आया और उसने घमंडी हाथी को सबक सिखाने का सोचा। फिर एक दिन हाथी भोजन करके हरी घास पर सो रहा था। चींटी सोते हुए हाथी की सूंड़ में घुस गई और अंदर से उसे काटने लगी। जैसे ही चींटी ने हाथी को काटा, हाथी दर्द के मारे जोर-जोर से रोने लगा और मदद के लिए पुकारने लगा। चींटी ने हाथी के रोने की आवाज सुनी और सूंड़ से बाहर निकल आई। हाथी उसे देख कर डर गया और अपने किए की माफी मांगी। जब चींटी को महसूस हुआ कि हाथी को अपनी गलती का अहसास हो गया है, तो उसने हाथी को माफ कर दिया। हाथी अब बिलकुल बदल गया और उसने वादा किया कि अब वो किसी को नहीं सताएगा और दूसरों की मदद करेगा।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष कार्यस्थल पर आपकी ऊर्जा और काम की गति की प्रशंसा होगी। आज साझेदारी के कारोबार में लाभ होगा, लेकिन जोखिमभरे निवेश से दूर रहें। ऊर्जा का स्तर बढ़िया रहेगा।

वृषभ नौकरी-पेशा लोगों को पदोन्नति की खबर मिल सकती है। व्यापार में नए सौदे होंगे, प्रतिस्पर्धियों को पछाड़ देंगे। पार्टनर के साथ किसी बात को लेकर गलतफहमी हो सकती है।

मिथुन कार्यस्थल पर सहकर्मियों का पूरा सहयोग मिलेगा। शेयर/म्यूचुअल फंड में सोच-समझकर निवेश करें। लव लाइफ में नयापन और ताजगी महसूस होगी।

कर्क काम का बोझ थोड़ा अधिक रह सकता है। कारोबारी हैं तो सोच-समझकर सौदे करें। घरेलू कलह से बचें। अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं। मानसिक तनाव से बचें।

सिंह नए प्रोजेक्ट की शुरुआत के लिए दिन शुभ है। कारोबार में यात्रा के योग हैं। दांपत्य जीवन में खुशहाली रहेगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। सेहत अच्छी रहेगी।

कन्या कार्य स्थल पर अपनी बौद्धिक क्षमता से कठिन समस्या का समाधान निकाल लेंगे। कारोबारी हैं तो पुराने निवेश से लाभ मिल सकता है। कुटुंब में उत्सव का माहौल रहेगा।

तुला सहकर्मियों के साथ मिलकर किया गया काम सफल होगा। कारोबारी हैं तो लेनदेन के मामलों में सावधानी बरतें। अविवाहितों को शादी का प्रस्ताव आ सकता है।

वृश्चिक कार्यस्थल पर विरोधी शांत रहेंगे और कार्य में सफलता मिलेगी। कारोबार में किसी बड़े निवेश की योजना बन सकती है। पार्टनर के साथ यात्रा पर जाने का योग बन सकता है।

धनु नौकरी बदलने का विचार मन में आ सकता है। व्यापारिक सौदे सफल रहेंगे। पार्टनर से किसी बात को लेकर बहस न करें। नए इनकम सोर्स बनेंगे।

मकर काम में सफलता और उच्च पद का लाभ मिल सकता है। कारोबारी हैं तो व्यापार में विस्तार होगा। जीवनसाथी का भरपूर सहयोग मिलेगा। पैसों के मामले में सतर्क रहें।

कुम्भ कार्य स्थल पर रुका हुआ काम किस्मत के भरोसे पूरा हो जाएगा। कारोबारी हैं तो भरपूर लाभ की संभावना है। प्रेम जीवन में रोमांस की बढ़ोतरी होगी।

मीन ऑफिस में आपके सुझावों का स्वागत किया जाएगा। कारोबार में योजनानों का लाभ मिलेगा। जीवनसाथी आपकी भावनाओं की कद्र करेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

मैं मरे हुए लोगों के बारे में नहीं सोचता : राम गोपाल

हाल ही में फिल्ममेकर राम गोपाल वर्मा से श्रीदेवी से जुड़ी कुछ बातें की गई। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्होंने श्रीदेवी की बर्थ एनिवर्सरी पर कुछ खास किया या उनकी फिल्में देखीं, तो उन्होंने कहा कि वह मरे हुए लोगों के बारे में नहीं सोचते। राम गोपाल वर्मा ने श्रीदेवी की बायोग्राफी 'द इम्प्रेस' को लेकर भी बात की। इस किताब की घोषणा प्रियंका चोपड़ा ने श्रीदेवी की बर्थ एनिवर्सरी पर की थी। वैरायटी इंडिया से बातचीत में राम गोपाल वर्मा ने बताया कि उन्होंने इस किताब के लिए एक चैप्टर लिखा है। उन्होंने कहा कि उन्हें बताया गया है कि उनका चैप्टर 'सबसे अच्छा' है। हालांकि, उन्होंने मजाक में कहा कि शायद किताब में योगदान देने वाले बाकी सभी लोगों से भी यही कहा गया होगा। किताब के नाम को लेकर राम गोपाल वर्मा ने कहा कि उन्हें नहीं पता था कि इसका नाम 'द इम्प्रेस' है। उन्होंने कहा कि शायद श्रीदेवी इस नाम की हकदार थीं। हालांकि, वह उन्हें 'स्क्रीन क्वीन' कहना ज्यादा पसंद करते, क्योंकि उनके मुताबिक बाकी सभी एक्ट्रेसेस उनके बाद आईं। जब राम गोपाल वर्मा से पूछा गया कि क्या उन्होंने श्रीदेवी की बर्थ एनिवर्सरी पर उनकी कोई फिल्म देखी या उन्हें याद करने के लिए कुछ खास किया, तो उन्होंने साफ कहा, 'नहीं। मैं मरे हुए लोगों के बारे में बिल्कुल नहीं सोचता। जब कोई चला जाता है, तो वह मेरी जिंदगी से बाहर हो जाता है। मैं मरे हुए लोगों के बारे में सोचने के बजाय अपनी जिंदगी पर ध्यान देना पसंद करता हूं।' उन्होंने आगे बताया कि वह इस समय अपनी फिल्म 'पुलिस कंपनी' की शूटिंग में पूरी तरह व्यस्त हैं, जिसमें हर्षवर्धन राणे नजर आएंगे। राम गोपाल वर्मा ने यह भी बताया कि उन्होंने श्रीदेवी की फिल्में जरूर देखी हैं और आज भी उनके काम को समझ पाना उनके लिए आसान नहीं है। उन्होंने कहा, 'उनकी मृत्यु को इतने साल बीत चुके हैं। आज भी, मैं पर्दे पर उनकी एक्टिंग समझ नहीं पाता।

हेमा मालिनी ने देखी बंटवारा 1947

फिल्म बंटवारा 1947 14 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज हुई। भारत और पाकिस्तान विभाजन की पृष्ठभूमि पर बनी इस फिल्म में सनी देओल, प्रीति जिंटा, शबाना आजमी और करण देओल अहम भूमिकाओं में हैं। दिग्गज अभिनेत्री शबाना आजमी ने हाल ही में यह फिल्म देखी और अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्हें यह फिल्म पसंद आई है। हेमा मालिनी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से पोस्ट शेयर किया है। उन्होंने फिल्म की तारीफ की है। साथ ही सनी देओल और शबाना आजमी के अभिनय को जबर्दस्त बताया है। साथ ही पोते करण देओल के अभिनय पर भी पॉजिटिव रेस्पॉन्स दिया है। इस फिल्म को बनाने के लिए ड्रीम गर्ल ने आमिर खान को बधाई दी है। फिल्म का संदेश उन्हें काफी प्रेरित करने वाला लगा। हेमा मालिनी ने पोस्ट शेयर करते हुए लिखा है, मैंने कल फिल्म बंटवारा देखी। यह सच में बेहद शानदार है और एक साफ संदेश देती है कि आज देश को किस चीज की जरूरत है?हेमा मालिनी ने आगे लिखा है, यह फिल्म हमें याद दिलाती है कि नफरत और बंटवारे से कहीं ज्यादा जरूरी इंसानियत, आपसी सम्मान और भाईचारा है। मुझे उम्मीद है कि फिल्म का खूबसूरत संदेश लोगों को अपनी सोच बदलने और नफरत के बजाय करुणा व दया चुनने के लिए प्रेरित करेगा। राजकुमार संतोषी का निर्देशन शानदार है और सनी देओल व शबाना आजमी की एक्टिंग भी जबर्दस्त रही। करण देओल और प्रीति जिंटा ने भी अच्छा काम किया है। आमिर खान को ऐसी सदाबहार फिल्म बनाने के लिए बहुत बधाई। इस फिल्म का मैसेज सच में आज की जरूरत है। फिल्म बंटवारा 1947 के ट्रेलर लॉन्च इवेंट में इस फिल्म के निर्देशन राजकुमार संतोषी ने सनी देओल के पिता व दिवंगत एक्टर धर्मेंद्र का जिक्र किया था। उन्होंने बताया कि यही (बंटवारा 1947) आखिरी फिल्म थी, जो धर्मेंद्र ने देखी थी। संतोषी ने कहा, यह फिल्म धर्मेंद्र ने भी देखी थी और देखकर काफी भावुक हो गए थे। धरम जी का आशीर्वाद बहुत है फिल्म के लिए। नैरेशन जब सुना था तो वे बहुत इमोशनल थे। आंख में आंसू आ गये थे और बहुत आशीर्वाद दिया। धरम जी की मेरे ख्याल से यह आखिरी फिल्म है, जो उन्होंने देखी थी। तब भी उन्होंने बोला राज ये पिक्चर बहुत चलेगी।

बोलीं- सनी देओल की एक्टिंग जबर्दस्त, पोते करण की भी की तारीफ

मेरी मां सबसे मजबूत हैं : सोहेल खान

सोहेल खान बीते दिनों रियलिटी शो द अलायंस में नजर आए थे। इसके खत्म होने के बाद उन्होंने इसकी सक्सेस पर पार्टी भी रखी, जहां कई सेलेब्स शामिल हुए थे। इस शो के बाद सोहेल अब फैमिली के साथ फुरसत के पल बिता रहे हैं। उन्होंने अपनी मां के साथ एक तस्वीर शेयर की है। अभिनेता सोहेल खान ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से एक पोस्ट शेयर किया है। उन्होंने अपनी मां सलमा के साथ फोटो साझा की है, जिसमें वे मां की गोद में सिर रखकर सुकून से लेटे हैं। इसके साथ उन्होंने कैप्शन लिखा है, मेरी मम्मा सबसे मजबूत हैं। साथ ही रेड हार्ट इमोजी बनाया है। सोहेल खान की यह तस्वीर देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि द अलायंस के बाद वे फैमिली के साथ क्वालिटी टाइम बिता रहे हैं। सोहेल अक्सर अपने सोशल मीडिया अकाउंट से फैमिली फोटोज शेयर करते हैं। उनकी इस तस्वीर पर नेटिजंस खूब प्यार लुटा रहे हैं। यूजर्स लिख रहे हैं, दुनिया की सारी सहूलियत एक तरफ और मां की गोद में सिर रखकर सोना एक तरफ। यूजर्स लिख रहे हैं, कमाल की जगह है मां की गोद, यहां सारी टेंशन खत्म हो जाती हैं। सोहेल खान के इस पोस्ट पर प्रतीक सहजपाल और कुशाल टंडन समेत कई सेलेब्स ने भी रिएक्शन दिए हैं। बता दें कि सोहेल खान ने हाल ही में एक इंटरव्यू में बताया कि रियलिटी शो से आने के बाद उन्हें हेल्थ प्रॉब्लम हुई थी। ऐसा वजन कम होने के चलते हुआ। सोहेल ने एचटी के साथ इंटरव्यू के दौरान यह जिक्र किया था। दरअसल, सोहेल खान के अचानक कम हुए वजन को लेकर फैंस भी चिंतित हैं। इस बारे में जब एक्टर से पूछा गया तो उन्होंने कहा, मैंने पहली बार किसी रियलिटी शो में हिस्सा लिया था।

उन्होंने अपनी मां सलमा के साथ फोटो साझा की है, जिसमें वे मां की गोद में सिर रखकर लेटे हैं

दुनिया की सबसे आक्रामक प्रजाति में से एक हैं ये चीटियां

डंक मारने वाली इन लाल अग्नि चीटियों को दुनिया की सबसे आक्रामक प्रजाति करार दिया गया है। कहा जा रहा है कि, पहले ये चीटियां अन्य महाद्वीपों तक ही सीमित थीं, लेकिन क्लाइमेट चेंज के कारण अब ये चीटियां तेजी से ब्रिटेन की ओर बढ़ रही हैं। वैज्ञानिकों की इस चेतावनी के बाद अब वहां हड़कंप मच हुआ है। डेलीस्टार की रिपोर्ट के अनुसार, ये लाल अग्नि चीटियां ब्रिटेन पर धावा बोलने की तैयारी में हैं। बताया जा रहा है कि, वैज्ञानिकों ने 88 लाल चीटियों के घोंसलों की पहचान की है, जो इटली के सिसिली द्वीप पर सिरैक्यूज सिटी के पास 5 हेक्टेयर में फैले हैं। कहा जा रहा है कि, जल्द ही ये डंक मारने वाली इन लाल अग्नि चीटियां लंदन समेत प्रमुख शहरों पर कब्जा कर सकती हैं। स्पेन के इंस्टिट्यूट ऑफ इवोल्यूशनरी बायोलॉजी के स्टडी लीडर रोजर विला की मानें तो, इन डंक मारने वाली चीटियों का कब्जा यूरोप के आधे शहरी इलाके पर हो सकता है। कहा जा रहा है कि, इन लाल अग्नि चीटियों से बार्सिलोना, रोम, लंदन या पेरिस जैसे बड़े शहर भी प्रभावित हो सकते हैं, जिससे लोगों को काफी परेशानी हो सकती है। माना जा रहा है कि, क्लाइमेट चेंज के कारण हालात काफी खराब हो सकते हैं। इस पूरे मामले पर उनका कहना है कि, इस तरह इनके अनियंत्रित रूप से फैलने से पहले ही रोकथाम के कदम उठाने की जरूरत है। इसके दर्दनाक डंक और उनके घोंसलों के अलग तरह के टीलों के कारण इस चींटी का पता लगाना संभव है। हालांकि, इस काम को करने के लिए एक एक्सपर्ट की जरूरत होगी।

अजब-गजब | **माली ने उगाया दुनिया का सबसे भारी खीरा**

जिसका वजन था 116.4 किलोग्राम

दुनियाभर में ऐसे कई टैलेंटेड लोग मौजूद हैं, जो कई बार अपने हैरतअंगेज कारनामों से लोगों को चौंका देते हैं। हाल ही में एक ऐसे ही शख्स का एक गजब का कारनामा इन दिनों सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना हुआ है। दरअसल, एक माली ने हाल ही में दुनिया का सबसे भारी खीरा उगाया है, जिसका वजह जानकर यकीनन आपके भी होश उड़ जाएंगे। द सन की रिपोर्ट के मुताबिक, इस गार्डनर का नाम विंस सजोडिन बताया जा रहा है, जिन्होंने अपने इस दूसरे रिकॉर्ड तोड़ने वाले कारनामे से लोगों को हैरान कर दिया है। बता दें कि, 2 साल पहले ही विंस सजोडिन ने दुनिया का सबसे भारी मैरो विकसित किया था, जिसका वजन 116.4 किलोग्राम था। अब एक बार फिर उन्होंने अपने गजब के कारनामे से लोगों को हैरत में डाल दिया है। दरअसल, इस कारनामे के लिए विंस ने गिनीज वर्ल्ड ऑफ रिकॉर्ड्स का खिताब अपने नाम किया था। बता दें कि, ऐसा कर उन्होंने 2015 में डेविड थॉमस द्वारा बनाए गए वर्ल्ड रिकॉर्ड को तोड़ दिया है। बताया जा रहा है कि, मई में लगाए गए बीज से यह खीरा उगाया गया है, जिसे हर दिन लिक्विड फूड दिया गया है। यही वजह थी कि पत्तियों और फल को बढ़ने में मदद मिलती रही। बता दें कि, विंस यूके नेशनल जायंट वेजीटेबल्स चैंपियनशिप में मालवर्न ऑटम शो खीरे को सबके सामने लाए थे। विंस सजोडिन ने बताया कि, उनका परिवार उन्हें विंस द वेज कहता है। इस पर विंस सजोडिन का कहना है कि, सब्जियां ताजी हवा के साथ-साथ एक सीक्रेट फॉर्मूले की वजह से इतना बड़ा आकार ले पाती हैं। यह एक बड़ा अचीवमेंट है। मैं आज सुबह पूर्व वर्ल्ड रिकॉर्ड धारक डेविड थॉमस से बात कर रहा था और वह आश्चर्यचकित था। बीच में तापमान में बदलाव के कारण डर था कि, कहीं खीरा फट ना जाए, लेकिन शुक्र है कि खीरा सुरक्षित रहा। उन्होंने आगे बताया कि, खीरे को जालीदार झूलन खटोले में उगाया गया था, जिससे उसे वजन सहने में मदद मिली। विंस सजोडिन की मानें तो उन्होंने इसके लिए काफी मेहनत की है।

अमेरिका से दोस्ती का अगला पड़ाव महाराष्ट्र-उत्तर प्रदेश

कार्यक्रम में 4पीएम के संपादक संजय शर्मा पत्रकार हेमंत तिवारी व ममता त्रिपाठी रहीं मौजूद

निवेशकों के लिए यूपी-महाराष्ट्र भरोसेमंद गंतव्य

» निवेश, तकनीक और विनिर्माण के मोर्चे पर दो राज्यों ने कसी कमर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। भारत-अमेरिका रिश्तों की कहानी अब सिर्फ दिल्ली और वाशिंगटन के बीच कूटनीतिक मुलाकातों तक सीमित रहने वाली नहीं है। दोनों देशों के बीच बढ़ती आर्थिक साझेदारी को जमीन पर उतारने की तैयारी में महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य भी अपनी भूमिका तेजी से तलाश रहे हैं। एक तरफ महाराष्ट्र खुद को अमेरिका समेत दुनिया के निवेशकों के लिए भारत का सबसे सफल और भरोसेमंद गंतव्य बता रहा है तो दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश बदलती औद्योगिक तस्वीर में अपनी नई पहचान गढ़ते हुए अमेरिकी निवेश और तकनीक के लिए दरवाजे खोल रहा है। संदेश साफ है कि भारत-अमेरिका साझेदारी का अगला बड़ा अध्याय यूपी जैसे राज्यों की औद्योगिक ताकत से लिखा जाएगा।

मुंबई में इंडो-अमेरिकन चैंबर आफ कामर्स द्वारा आयोजित कार्यक्रम में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक रिश्तों को नई ऊंचाई देने की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि महाराष्ट्र निवेशकों के लिए देश का सबसे सफल गंतव्य बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। उन्होंने राज्य की आर्थिक क्षमता औद्योगिक आधार और वैश्विक निवेशकों के बढ़ते भरोसे का उल्लेख करते हुए कहा कि महाराष्ट्र भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए अपनी अर्थव्यवस्था को और मजबूत बनाने के लिए तैयार है। दरअसल भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक संबंध पिछले कुछ वर्षों में लगातार विस्तार लेते रहे हैं। निवेश, तकनीक, विनिर्माण, रक्षा, डिजिटल अर्थव्यवस्था और कारोबारी सहयोग जैसे क्षेत्रों में दोनों देशों की साझेदारी का दायरा बढ़ा है। ऐसे में राज्यों के बीच निवेश आकर्षित करने की प्रतिस्पर्धा भी तेज हुई है। महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश इसी बदलते परिदृश्य में अपने अपने मॉडल के साथ सामने आते दिखाई दे रहे हैं। महाराष्ट्र की ताकत उसकी औद्योगिक विरासत, वित्तीय राजधानी मुंबई, मजबूत बुनियादी ढांचे और समुद्री संपर्क में है।

भारत-अमेरिका साझेदारी को नई ऊंचाई देने की तैयारी

यूपी-महाराष्ट्र की सक्रियता बड़े बदलाव का संकेत

महाराष्ट्र जहां मुंबई और अपने विशाल औद्योगिक नेटवर्क के बल पर वित्त, विनिर्माण और वैश्विक कारोबार का दरवाजा बनने की कोशिश कर रहा है, वहीं उत्तर प्रदेश अपने विशाल बाजार, युवा आबादी, बदलते औद्योगिक ढांचे और नए क्षेत्रों में विस्तार के जरिए खुद को भविष्य के औद्योगिक केंद्र के रूप में स्थापित करने की कोशिश में है। इसीलिए भारत-अमेरिका साझेदारी के इस नए दौर को केवल दो देशों के रिश्तों की कहानी मानना अधूरा होगा। असल तस्वीर यह है कि इस साझेदारी का लाभ राज्यों तक पहुंचे और अमेरिकी पूंजी तथा तकनीक को सीधे राज्य की अर्थव्यवस्था, उद्योग और रोजगार से जोड़ा जाए। महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश की सक्रियता इसी बड़े बदलाव का संकेत है। महाराष्ट्र पहले ही वैश्विक निवेशकों के सामने अपनी दावेदारी मजबूती से रख चुका है। उत्तर प्रदेश भी अब पीछे रहने के मूड में नहीं है। एक राज्य के पास मुंबई जैसा वैश्विक कारोबारी दरवाजा है तो दूसरे के पास विशाल बाजार और तेजी से बदलती औद्योगिक जमीन। दोनों की जरूरतें अलग हैं, लेकिन लक्ष्य एक है-अमेरिका के साथ बढ़ते आर्थिक रिश्तों में अपने हिस्से की बड़ी भूमिका सुनिश्चित करना।

यूपी की औद्योगिक ताकत का सभी मान रहे हैं लोहा

दूसरी ओर उत्तर प्रदेश ने भी अपनी आर्थिक पहचान में बड़ा बदलाव लाने की कोशिश तेज कर दी है। कभी केवल कृषि और पारंपरिक उद्योगों के लिए पहचाने जाने वाले इस राज्य में अब इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमीकंडक्टर, डिफेंस, तकनीक, फिल्म निर्माण और विनिर्माण जैसे नए क्षेत्रों को विकास का आधार बनाया जा रहा है। यही कारण है कि अमेरिकी निवेशकों की नजर में उत्तर प्रदेश अब केवल एक बड़ा उपभोक्ता बाजार नहीं, बल्कि उत्पादन और तकनीक के संभावित केंद्र के रूप में भी अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहा है। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश की ओर से भी निवेश के लिए उपयुक्त स्थान और क्षेत्र उपलब्ध कराने की बात सामने आई। राज्य सरकार का जोर इस बात पर है कि उत्तर प्रदेश को केवल पारंपरिक उद्योगों तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इलेक्ट्रॉनिक्स, तकनीकी क्षेत्र, फिल्म निर्माण और आधुनिक विनिर्माण के लिए भी वैश्विक कंपनियों के अनुकूल बनाया जाए।

यूपी में तेजी से विकसित होती महिलाओं की आर्थिक भागीदारी

इस पूरी कवायद में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को भी महत्वपूर्ण माना गया है। उत्तर प्रदेश में महिला स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी लाखों महिलाओं की मौजूदगी को आर्थिक बदलाव की संभावित ताकत के रूप में देखा जा रहा है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था से लेकर छोटे कारोबार तक महिलाओं की बढ़ती भागीदारी को बड़े निवेश और रोजगार के अवसरों से जोड़ने की कोशिश की जा रही है। भारत और अमेरिका के बीच आर्थिक साझेदारी के लिए राज्यों की यह सक्रियता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वैश्विक कंपनियां अब केवल बाजार नहीं देखतीं। वे निवेश के लिए बुनियादी ढांचा, कुशल मानव संसाधन, तकनीकी क्षमता, कारोबार की सुविधा और बड़े बाजार तक पहुंच जैसे कई पहलुओं को एक साथ परखती हैं।

आक्रामक नीति के साथ आगे बढ़ी है यूपी सरकार

योगी आदित्यनाथ की सरकार पिछले कुछ वर्षों में निवेश और औद्योगिक विकास को लेकर जिस आक्रामक नीति पर आगे बढ़ी है उसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा विदेशी निवेश को आकर्षित करना है। राज्य में बुनियादी ढांचे के विस्तार, नए औद्योगिक क्षेत्रों और निवेश के लिए अनुकूल माहौल तैयार करने पर जोर दिया गया है। अब इसी कोशिश को भारत-अमेरिका आर्थिक साझेदारी के व्यापक फ्रेम से जोड़ने की तैयारी दिखाई दे रही है। उत्तर प्रदेश के प्रतिनिधियों की ओर से यह भी रेखांकित किया गया कि राज्य अब केवल फिल्म और आईटी तक सीमित नहीं है।

केंद्र को सुप्रीम नसीहत- आप यूपीएससी को देखिए, एनटीए सीखे

» नीट यूजी पेपर लीक मामले में केंद्र सरकार की दलील पर सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। नीट यूजी पेपर लीक मामले में बुधवार को सुप्रीम कोर्ट में अहम सुनवाई हुई। इस दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने बताया कि प्रश्न पत्र तैयार करने से लेकर छात्रों तक पहुंचाने में गोपनीयता को लेकर कितनी सावधानी बरती जाती है।

जज ने कहा कि आप जो बता रहे हैं, उन सब बातों की राधाकृष्णन कमिटी समीक्षा कर चुकी है। हम चाहते हैं कि दूरगामी समाधान हो। उन्होंने कहा, आप यूपीएससी को देखिए परीक्षा बिना समस्या के आयोजित हो रही है। एनटीए को भी ऐसा करना होगा।

पंत ने टेस्ट में सबसे तेज 100 छक्के जड़कर रचा इतिहास

» ऐसा करने वाले बने पहले भारतीय, तोड़ा गिलक्रिस्ट व मैकुलम का वर्ल्ड रिकॉर्ड

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। ऋषभ पंत ने टेस्ट क्रिकेट में इतिहास रच दिया है। वे क्रिकेट के सबसे लंबे फॉर्मेट में 100 छक्के लगाने वाले पहले भारतीय और वर्ल्ड के चौथे खिलाड़ी बन गए हैं। इससे पहले ये उपलब्धि ऑस्ट्रेलिया के एडम गिलक्रिस्ट, इंग्लैंड के बेन स्टोक्स और न्यूजीलैंड के ब्रेंडन मैकुलम हासिल कर चुके हैं। अब इस लिस्ट में भारत के विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत भी शामिल हो गए हैं। उन्होंने मंगलवार को गॉल इंटरनेशनल स्टेडियम में भारत और श्रीलंका के बीच पहले टेस्ट मैच के चौथे दिन यह उपलब्धि हासिल की।

मैच से पहले पंत के नाम 97 छक्के थे और इस खास मुकाम तक पहुंचने के लिए उन्हें तीन और छक्कों की जरूरत थी। उन्होंने टेस्ट मैच की पहली पारी में एक छक्का लगाया था, जब उन्होंने 62 गेंदों में 39 रन बनाए थे, उस पारी में चार चौके भी शामिल थे। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने दूसरी पारी में दो छक्के लगाकर यह उपलब्धि हासिल की। पंत ने खेल के सबसे लंबे फॉर्मेट में अपनी 89वीं पारी में 100 छक्के पूरे किए। इसके साथ उन्होंने एडम गिलक्रिस्ट के सबसे तेज 100 छक्कों का रिकॉर्ड तोड़ दिया। गिलक्रिस्ट ने ये करनामा 138 पारियों में किया था। इसके अलावा पंत सबसे कम गेंद खेल कर ये आंकड़ा छूने वाले पहले बल्लेबाज बन गए हैं। पंत ने 4918 गेंद में ये आंकड़ा पार किया जबकि गिलक्रिस्ट को ये आंकड़ा छूने के लिए 6578 गेंदों का सामना करना पड़ा। पंत अब टेस्ट में सबसे कम मैचों में 100 छक्के लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची में नंबर 1 पर आ गए हैं। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान बेन स्टोक्स इस सूची में दूसरे स्थान पर हैं। एडम गिलक्रिस्ट तीसरे नंबर पर है। न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान ब्रेंडन मैकुलम इस सूची में चौथे स्थान पर हैं।

कीथ बार्कर ने प्रोफेशनल क्रिकेट को कहा अलविदा

नईदिल्ली। इंग्लैंड के अनुभवी ऑलराउंडर और वार्विकशायर के खिलाड़ी कीथ बार्कर ने प्रोफेशनल क्रिकेट से तत्काल प्रभाव से संन्यास लेने का एलान कर दिया है। 39 वर्षीय बार्कर का क्रिकेट करियर 17 सीजन तक चला। उन्होंने अपने करियर का आखिरी दौर उसी क्लब के साथ खत्म किया, जहां से उन्होंने अपने पेशेवर सफर की शुरुआत की थी। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज और बाएं हाथ के बल्लेबाज बार्कर ने 2009 में वार्विकशायर के लिए डेब्यू किया था। हालांकि, इस सीजन 12 महीने के कॉन्ट्रैक्ट पर क्लब में वापसी करने के बाद उनका सफर उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा। घुटने की चोट के कारण उन्हें ज्यादा मैच खेलने का मौका नहीं मिला और वह इस सीजन सिर्फ दो काउंटी चैंपियनशिप मुकाबलों में मैदान पर उतरे। उन्होंने अपना आखिरी मैच जून में स्कारबोरो में यॉर्कशायर के खिलाफ खेला था, जो ड्रॉ पर समाप्त हुआ। क्रिकेट को अपना पेशा बनाने से पहले बार्कर फुटबॉल में भी प्रतिभाशाली खिलाड़ी थे। उन्होंने इंग्लैंड की अंडर-20 टीम तक का प्रतिनिधित्व किया था। हालांकि, बाद में उन्होंने क्रिकेट पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया और यहीं से उनके शानदार क्रिकेट करियर की शुरुआत हुई।

जनगणना के सवालों को लेकर मचा सियासी बवाल

जाति जनगणना को लेकर पहले भी रहा है विवाद

धर्म और माता-पिता की जानकारी को लेकर कांग्रेस ने उठाए सवाल

» जाति से लेकर जन्मस्थान तक पर घमासान, एनडीए सरकार पर हमलावर विपक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जनगणना को लेकर अब सियासी संग्राम मच गया है। विपक्ष ने इसको लेकर एनडीए सरकार पर प्रहार किया है। कांग्रेस ने बुधवार को आरोप लगाया कि जनगणना-27 में जाति से जुड़े सवाल पूछने का तरीका जानबूझकर गलत रखा गया है और इसके पीछे गहरा और बुरा मकसद हो सकता है। पार्टी के संचार विभाग के प्रभारी महासचिव जयराम रमेश ने दावा किया कि धर्म, जन्म तिथि और माता-पिता के जन्म स्थान से जुड़ी इतनी बारीक जानकारियां पहले कभी नहीं मांगी गईं।

कांग्रेस ने खास तौर पर 21 के सुप्रीम कोर्ट हलफनामे का हवाला देते हुए पूछा है कि जब सरकार ने जातियों की पहचान के लिए ड्रॉप-डाउन मेनू की उपयोगिता बताई थी, तो 27 की जनगणना में इसे शामिल क्यों नहीं किया गया। जयराम रमेश ने एक्स पर एक मीडिया रिपोर्ट साझा की। इस रिपोर्ट में दावा किया गया था कि जनगणना 27 के दौरान माता-पिता दोनों के धर्म, जन्म तिथि और जन्म स्थान की जानकारी मांगी जा रही है।

सवाल पूछने का तरीका जानबूझकर गलत : जयराम

रमेश ने अपनी पोस्ट में कहा, जनगणना 27 में जाति के बारे में सवाल पूछने का तरीका जानबूझकर गलत है। धर्म, जन्म तिथि और माता-पिता के जन्म स्थान के बारे में इतने बारीक सवाल पहले कभी नहीं पूछे गए। उन्होंने आगे कहा कि जनगणना गोपनीय होती है। साफ है कि जनगणना 027 के पीछे कोई गहरा और बुरा मकसद है। कांग्रेस ने आरोप लगाया था कि मोदी सरकार जाति जनगणना को रोकना चाहती है। पार्टी ने सवाल उठाया था कि जनगणना 27 में जाति चुनने के लिए ड्रॉप-डाउन मेनू क्यों शामिल नहीं किया गया, जबकि केंद्र सरकार ने सितंबर 21 में सुप्रीम कोर्ट में दाखिल अपने हलफनामे में इसकी सिफारिश की थी। विपक्षी पार्टी ने दावा किया था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 30अप्रैल 25 को जाति जनगणना कराने की घोषणा कर पूरी तरह से यू-टर्न लिया था। कांग्रेस का कहना है कि अब सरकार अपने ही पहले वाले यू-टर्न पर यू-टर्न ले रही है।

2021 के हलफनामे का हवाला देकर कांग्रेस ने घेरा

इतना ही नहीं, यह जानकारी गांव के स्तर तक दर्ज किए जाने की बात भी रिपोर्ट में कही गई है। रिपोर्ट के मुताबिक, जनगणना के सवाल-जवाब वाले फॉर्म में जाति बताने के लिए खुला विकल्प दिया गया है। इसके अलावा, जवाब देने वाला व्यक्ति जाति नहीं बताना चाहते और कोई जाति नहीं जैसे विकल्प भी चुन सकता है। जयराम रमेश ने बताया कि 21 सितंबर 21 को मोदी सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में एक हलफनामा दाखिल किया था। इसमें जाति जनगणना की मांग को स्पष्ट रूप से खारिज किया गया था। हालांकि, रमेश ने एक्स पर साझा की गई अपनी पोस्ट में हलफनामे के पैरा 12 (डी) का हवाला देते हुए कहा कि इसमें जातियों का रजिस्टर तैयार करने के लिए ड्रॉप-डाउन मेनू का सुझाव दिया गया था।

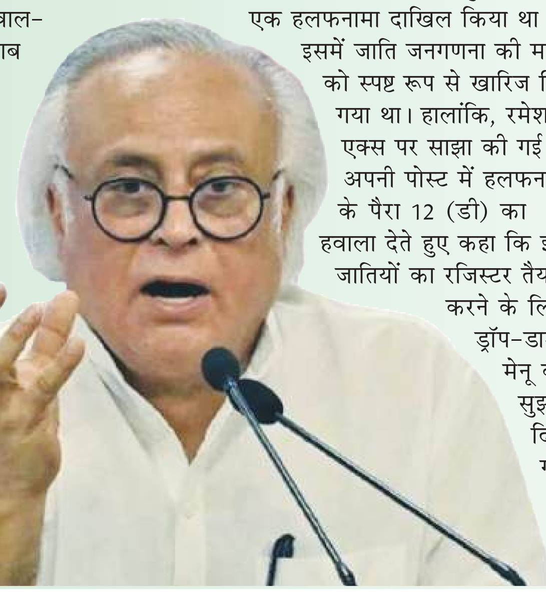

महिला आरक्षण व परिसीमन विधेयक पर भी बात

बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विपक्षी दलों से लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण लागू करने से संबंधित परिसीमन विधेयक का समर्थन करने की अपील पर भी चर्चा होने की संभावना है। माना जा रहा है कि सरकार निकट भविष्य में इस संबंध में संविधान संशोधन विधेयक ला सकती है। परिसीमन से जुड़े विधेयक के जरिये महिला आरक्षण लागू करने के संबंध में सरकार की संभावित पहल के बारे में पूछे जाने पर कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने पिछले सप्ताह कहा था कि इस मुद्दे पर 19 अगस्त की कार्य समिति की बैठक में चर्चा होगी।

खरगे की अध्यक्षता में कांग्रेस कार्य समिति में भाजपा को घेरने की तैयारी पर चर्चा

कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक बुधवार को नयी दिल्ली में होगी जिसमें देश के मौजूदा राजनीतिक हालात के साथ छात्रों से जुड़े मुद्दों और राम मंदिर में चढ़ावे की कथित चोरी को लेकर केंद्र सरकार को घेरने की रणनीति पर चर्चा होने की संभावना है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की अध्यक्षता में कार्य समिति की बैठक अपराह्न तीन बजे इंदिरा भवन में होगी। इसमें पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, महासचिव जयराम रमेश और के.सी. वेणुगोपाल समेत पार्टी के कई वरिष्ठ नेता शामिल होंगे। सूत्रों ने बताया कि छात्रों से जुड़े मुद्दों और राम मंदिर के चढ़ावे की कथित "चोरी" के आरोपों पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की अगुवाई वाली सरकार को घेरने की रणनीति, बैठक के प्रमुख एजेंडे में शामिल हो सकती है। इसके अलावा, अगले साल की शुरुआत में होने वाले विधानसभा चुनावों की तैयारियों की भी समीक्षा की जाएगी। पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर में अगले साल की शुरुआत में विधानसभा चुनाव होने की संभावना हैं।

बिहार में राजद का एनडीए सरकार पर हल्ला बोल

» नेता प्रतिपक्ष ने पूछा- सीएम गोलीकांड पर चुप क्यों हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। राजद ने आज बिहार की एनडीए सरकार के खिलाफ हल्ला बोल प्रदर्शन किया। बता दें नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पिछले कई दिनों एके 47 से घायल हुए छात्रों को लेकर सरकार को घेरने की कोशिश कर रहे हैं। आज वह अपनी सेना के साथ पटना की सड़क पर उतरे हैं। जेपी गोलंबर से राजभवन तक उन्होंने मार्च का एलान किया है। बिहार में छात्र आंदोलनों और पेपर लीक के मुद्दे पर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव आज अपनी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ राजभवन मार्च पर निकले हैं।

पांच किलोमीटर इस राजभवन मार्च में राजद के सांसद, विधायक, विधान पार्षद समेत सभी वरिष्ठ नेता, कार्यकर्ता शामि हैं। पटना के जेपी गोलंबर पर राजद नेता एकत्र हुए यहां से राजभवन की ओर आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि, पटना पुलिस ने बैरिकेडिंग कर तेजस्वी और राजद नेताओं को रोक लिया। सभी नेता यहीं डटे हुए हैं। इधर, तेजस्वी यादव ने सीएम सम्राट चौधरी पर जोरदार हमला बोला है। उन्होंने छात्रों, युवाओं और आम लोगों से मार्च में शामिल होने की अपील की। तेजस्वी ने छात्र आंदोलन के दौरान एके -47 से हुई फायरिंग के मामले में जिम्मेदार अधिकारियों को निलंबित करने और पूरे मामले की न्यायिक जांच कराने की मांग की।

पश्चिम बंगाल में भीषण अग्निकांड में 18 की दर्दनाक मौत

» कोलकाता और तारापीठ के होटलों में आग से मचा हड़कंप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में लगातार दो दिनों में दो बड़े होटल अग्निकांडों से हड़कंप मच गया है। राजधानी कोलकाता और बीरभूम जिले के धार्मिक स्थल तारापीठ में हुई अलग-अलग अग्नि दुर्घटनाओं में कुल 18 लोगों की जान चली गई। बंगाल में लगातार दो दिनों में दो बड़े होटल अग्निकांडों से हड़कंप मच गया है। राजधानी कोलकाता और बीरभूम जिले के धार्मिक स्थल तारापीठ में हुई अलग-अलग अग्नि दुर्घटनाओं में कुल 18 लोगों की जान चली गई।

पुलिस और अग्निशमन विभाग दोनों मामलों में होटल प्रबंधनों द्वारा फायर सेफ्टी नियमों के उल्लंघन की गहन जांच कर रहे हैं। होटल में ठहरे कई मेहमान बांग्लादेशी नागरिक थे जो इलाज के लिए कोलकाता आए थे। बचाव दल मौके पर पहुंचे और इमारत से कई लोगों को बाहर निकाला। रात 3 बजे के बाद, नौ लोगों को बचाया गया और कलकत्ता मेडिकल कॉलेज और अस्पताल ले जाया गया, जहां बाद में उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा